विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 28-02-2021

वर्ग षष्ठ शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

1. कर्मधारय समास:

जब तत्पुरुष समास के दोनों पदों में एक ही विभक्ति अर्थात् समान विभक्ति होती है, तब वह समानाधिकरण तत्पुरुष समास कहा जाता है। इसी समास को कर्मधारय नाम से जाना जाता है। इस समास में साधारणतया पूर्वपद विशेषण और उत्तरपद विशेष्य होता है। जैसे- नीलम् कमलम् = नीलकमलम्।।

इस उदाहरण में 'नीलम् कमलम्' इन दोनों पदों में समान विभक्ति अर्थात . प्रथमा विभक्ति है।

यहाँ 'नीलम्' पद विशेषण है और 'कमलम्' पद विशेष्य है। इसलिए यह कर्मधारय समास है।

2. द्विगुसमासः

‘संख्यापूर्वो द्विगु’ इस पाणिनीय सूत्र के अनुसार जब कर्मधारय समास का पूर्वपद संख्यावाची तथा उत्तरपद संज्ञावाचक होता है, तब वह ‘द्विगु समास’ कहलाता

यह समास प्रायः समूह अर्थ में होता है।

समस्त पद सामान्य रूप से नपुंसकलिङ्ग के एकवचन में अथवा स्त्रीलिङ्ग के एकवचन में होता है।

इसके विग्रह में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

जैसे

सप्तानां दिनानां समाहारः इति = सप्तदिनम्

3. बहुव्रीहिसमासः

जिस समास में जब अन्य पदार्थ की प्रधानता होती है तब वह बहुव्रीहि समास कहा जाता है। अर्थात् इस समास में न तो पूर्व पदार्थ की प्रधानता होती है और न ही उत्तर पदार्थ की, अपितु दोनों पदार्थ मिलकर अन्य पदार्थ का बोध कराते हैं। समस्त पद का प्रयोग अन्य पदार्थ के विशेषण के रूप में होता है। जैसे-

पीतम् अम्बरं यस्य सः = पीताम्बरः (विष्णु)।

पीला है वस्त्र जिसका वह = पीताम्बर, अर्थात् विष्णु।

: